चेतना विकास मूल्य शिक्षा
आधारित

अभिभावक विद्यालय

बच्चों के साथ सार्थक संवाद

प्रालेख (Draft Copy)

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद
से निःसृत
चेतना विकास मूल्य शिक्षा आधारित

अभिभावक विद्यालय

अमोरा पार्क के बाजू, वी आई पी रोड
रायपुर (छ.ग.) – 492001

"अभिभावक विद्यालय में अध्यापिका जी एवं विद्यार्थी के बीच हुए सार्थक संवाद का संकलन"

प्रणेता एवं मार्गदर्शक
श्री ए. नागराज जी

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम कक्षा एक से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सहअस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसे परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा यह डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और ऊर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सहअस्तित्ववादी विश्वदृष्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सहअस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सहअस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है, इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सहअस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्वपूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाववश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की आकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया, इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया।

मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उददेश्य है। इस उददेश्य को सार्थक बनाने के क्रम में कक्षा एक से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविष्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्वशुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता एवं लेखक
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचल, श्री भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

वंदना गीत

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित हैं धरा।
जिनसे हैं मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।

कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरन्तरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी।
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी।।

श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

वंदना उनकी करे, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

प्रदीप पूरक
बिजनौर

माता पिता के उपकारों की ओर ध्यानाकर्षण

माताजी

अध्यापिकाजी – आप अपनी माताजी को क्या कहते हो बेटाजी

बालक – अपनी माताजी को मैं मम्मीजी कहता हूँ

अध्यापिकाजी – मम्मीजी क्या क्या करती है

– मम्मीजी मुझसे बहुत प्यार करती है

– मम्मीजी मुझे नहलाती है

– कपड़े पहनाती है

– तैयार करती है

– फिर मम्मीजी मुझे खाना खिलाती है

अध्यापिकाजी – अच्छा आपकी मम्मीजी तो बहुत अच्छी है

– आप जब सो जाते हो तब आपका ध्यान रखती है

– आपको पता है वो आपको उठाती भी है

– मम्मीजी हमेशा आपके बारे में ही सोचती है।

– आपको कब भूख लगती है, कब प्यास लगती है, कब आपको बाथरूम जाना है सब मम्मीजी को पता होता है।

– आप सब जब विद्यालय आते हो मम्मीजी का आपके बिना मन भी नही लगता।

– मम्मीजी इन्तजार करती है कि कब मेरे बेटाजी घर आयेंगे।

– होता है न ऐसा, मम्मीजी आप लोगों का wait करती है

बालक – हाँ, मम्मीजी मेरा इन्तजार करती है।

अध्यापिकाजी – बेटाजी आप सब खुश रहना तो मम्मीजी भी खुश रहेंगें।

अध्यापिकाजी – आज आपके टिफिन में क्या है

बालक1 – आज मम्मीजी आलु पराठा दिये है

अध्यापिकाजी – आपके टिफिन में क्या है बेटाजी

बालक2 – मैं पुलाव लाया हूँ आज मम्मीजी पुलाव दिये है

बालक3 – और मैं सैंडविच लाया हूँ मम्मीजी सैंडविच बना कर दी है।

अध्यापिकाजी – क्या बात है बच्चों आपके टिफिन में तो बहुत अच्छी – अच्छी चीजे है

बालक – हॉ मुझे पसन्द भी है

अध्यापिकाजी – मम्मीजी आप लोगों के लिए सुबह – सुबह ये सब बना पाती है

बालक – हाँ बना लेती हैं

अध्यापिकाजी – तब तो उनको जल्दी उठना पड़ता होगा

बालक – हॉ मम्मी तो जल्दी उठ जाती है

अध्यापिकाजी – आपको नहलाता कौन है

बालक – मम्मीजी

अध्यापिकाजी – कपड़े कौन पहनाता है

बालक – मम्मीजी

अध्यापिकाजी – दूध भी तैयार करती हैं।

बालक – हॉ दूध भी देती है मैं पी लेता हूँ

अध्यापिकाजी – अरे आपकी मम्मीजी सुबह – सुबह कितना काम करती है आपको उठाती है, नहलाती है, कपड़े पहनाती, दूध पिलाती है नाश्ता बनाती है, फिर आपको विद्यालय भेजती है

बालक – हाँ उठाती है, नहलाती है, कपड़े पहनाती है, दूध पिलाती है नाश्ता बनाती है, और हमको विद्यालय भेजती है

अध्यापिकाजी – आज आप सब घर में जाकर मम्मीजी को बताना कि हमको पता है आप कितना काम करते हो ठीक है – बताओगे

बालक – हॉ बतायेगें

पिताजी

अध्यापिकाजी – बेटाजी आप पिताजी को क्या कहते है।

बालक – अपने पिताजी को मैं पापाजी कहता हूँ

– मुझे प्यार भी करते है

– पापाजी मेरे साथ खेलते है

– पापाजी मुझे खिलौना दिलाते है

– गाड़ी में घुमाने ले जाते है

अध्यापिकाजी – अच्छा : आपके पापाजी तो बहुत अच्छे हैं

– आपको पता है आपके पापाजी बहुत मेहनत करते हैं

– अच्छी – अच्छी खाने की चींजें लाते है

– आपके कपड़े लाते है

– तभी तो आपके खिलौने लाते हैं

– ये सब पापाजी की मेहनत से होता है

बालक – हाँ पापाजी सुबह काम पर जाते हैं। रात को वापस आते हैं।

अध्यापिकाजी – बेटाजी, आप जिस घर मे रहते हो वह भी पापाजी की मेहनत से बनता है।

आप जिस गाड़ी मे घुमते हो वो भी पापाजी की मेहनत से आती है।

बालक – अध्यापिकाजी मेरे पापाजी office जाते है।

– मेरे पापाजी दुकान जाते हैं।

– मेरे पापाजी खेत मे काम करते हैं।

– मेरे पापाजी रोज Hospital जाते हैं।

– मेरे पापाजी का office घर पर ही हैं।

अध्यापिकाजी – बहुत अच्छा बच्चो पापाजी का कहना मानना ठीक है

बालक – ठीक है।

माताजी-पिताजी

अध्यापिकाजी – अरे वाह बेटाजी आज तो आप बहुत अच्छे लग रहे है आपके बालों में तेल लगाकर इतनी सुदंर कंधी किसने की

बालक – मम्मीजी ने

अध्यापिकाजी – आपके नाखुन किसने काटे

बालक – पापाजी ने

अध्यापिकाजी – आज आप कितने साफ– सुधरे लग रहे हो बेटाजी

बालक – हॉ

अध्यापिकाजी – आपके कपड़े कौन ले कर आया

बालक – पापाजी, मम्मीजी

अध्यापिकाजी – आपके मम्मीजी, पापाजी बहुत अच्छे हैं

बेटाजी, आप घर जाकर कहना कि आप बहुत अच्छे हो

बालक – हॉ बोलूगां

अध्यापिकाजी – क्या बात है बेटाजी आज आप उदास हैं अच्छा नही लग रहा है?

बालक – आज मम्मी जी मुझे मारे

अध्यापिकाजी – बेटाजी मम्मीजी बच्चो को कभी नही मारते, मम्मीजी तो थपकी देते है

बालक – थपकी? थपकी क्या होती है?

अध्यापिकाजी – देखो जैसे मैने धीरे से आपके गाल मे थपकी दी, इसको मारना बोलेंगे क्या

बालक – नही मुझे तो दर्द नही हुआ

अध्यापिकाजी – हाँ बस इसे ही थपकी कहते है और यह थपकी मम्मीजी कई बार आपको देती हैं

– आपको थपकी देकर सुलाती हैं

– थपकी देकर उठाती हैं

– आप खाना नही खाते तो थपकी देकर खाना खिलाती हैं

– आप सुनते नही हो ता थपकी देकर आपको बात सुनने कहती हैं

बालक – समझ गया मम्मीजी ने मुझे मारा नही था थपकी दी थी।

भाईजी – बहनजी

अध्यापिकाजी	–	आज हम भाईजी–बहनजी की बाते करेंगें।
		ये आपके क्या लगते है बेटाजी
बालक	–	यह मेरे भाईजी हैं
		यह मेरी बहनजी हैं
		विद्यालय में भी सभी मेरे भाईजी बहनजी हैं।
		हम साथ–साथ खेलते हैं
		हम साथ–साथ खाना खाते हैं
		हम साथ–साथ विद्यालय जाते हैं
		हम साथ– साथ पढ़ते हैं
		हम साथ– साथ खुश होते हैं
अध्यापिकाजी	–	अरे वाह आप तो बहुत अच्छे बच्चे हो
		जब आपके भाईजी को चोट लगती है
		तब आपको भी बुरा लगता है
बालक	–	हॉ मुझे भी अच्छा नहीं लगता
अध्यापिकाजी	–	जब आपके भाईजी– बहनजी खुश होते है आप भी खुश होते हो
बालक	–	हॉ. मै भी खुश होता हूँ।
अध्यापिकाजी	–	जब आप खुश रहते है यही तो सहयोग है।
		हमेशा खुश रहना और सहयोग करना।
		इतना ही तो काम है बच्चों का।

मेरा शरीर

बालक – ये मेरा शरीर है
– ये मेरा सिर है
– ये मेरा चेहरा है
– ये आंखे है, कान है, नाक है, मुंह है,
– ये मेरा गला है, ये पेट है
– ये मेरे हाथ है, ये उगुलियॉं हैं
– ये मेरे पैर है ये पैर की उगलियां हैं।

अध्यापिकाजी – हमे अपने शरीर को साफ रखना चाहिये.
– बालों मे तेल डालकर रहते है तो बाल मजबूत होते हैं
– नहाने से शरीर साफ रहता है
– रोज सुबह उठकर Toilet जायेगें तो पेट स्वस्थ रहेगा
– हाथ पैर की उगलियों के नाखुन हमेशा छोटे हों.
– नाखुन बड़े होते है तो उसमें मैल जमता है
– इसलिए नाखुन छोटे होने चाहिये।
– बेटाजी हम जब भी भोजन करेंगे हाथ धोकर, पोछकर फिर करेंगे।

बालक – हाँ, मौसीजी रोज हमारा हाथ धोते है, पोछते भी है।

अध्यापिकाजी – अच्छा, आप मौसीजी को Thank you कहना।
– जब आप खाना खा लेते हो तब फिर एक बार मुँह–हाथ धोना और पोछना फिर खेलने जाना।

बालक – ठीक है।

अध्यापिकाजी – आप सब इतनी बातों पर ध्यान देंगे तो हमेशा स्वस्थ रहेंगे। मम्मीजी, मौसीजी और अध्यापिकाजी सब आपका सहयोग करेंगे।

बच्चो के साथ सार्थक संवाद

सम्बोधन

अध्यापिका जी – नमस्ते बेटा जी!

विद्यार्थी – नमस्ते अध्यापिका जी।

अध्यापिका जी – बेटाजी, हम सब सही संबोधन से जी और आप लगा कर ही बात करेंगे।

विद्यार्थी – अध्यापिका जी सम्बोधन क्या होता है?

अध्यापिका जी – बेटा जी अभी आपने मुझे क्या कहा

विद्यार्थी – अध्यापिका जी

अध्यापिका जी – बेटा जी यही सम्बोधन होता है

– अभी मैंने आपको कैसे बुलाया

विद्यार्थी – बेटा जी

अध्यापिका जी – मैंने आपको बेटा जी कह कर सम्बोधन किया आपने मुझे अध्यापिका जी कह कर सम्बोधन किया

– अच्छा बताओ आप मनन बेटा जी को क्या कह कर बुलाते है

विद्यार्थी – मनन भाई जी

अध्यापिका जी – और रक्षा बेटा जी को

विद्यार्थी – रक्षा बहन जी

अध्यापिका जी – भाई जी , बहन जी ये क्या हुआ

विद्यार्थी – सम्बोधन

अध्यापिका जी – अच्छा बताओ सेवाराम भैय्या जी और अम्बिका बहन जी को आप क्या कह कर बुलाते हो

विद्यार्थी – सेवाराम चाचा जी, अम्बिका मौसी जी

अध्यापिका जी – चाचा जी और मौसी जी ये क्या हुआ

विद्यार्थी – सम्बोधन

अध्यापिका जी – हम सभी अध्यापिका जी एक दूसरे को किस सम्बोधन से बुलाते है

विद्यार्थी – बहन जी

अध्यापिका जी – आप नीलेश चाचा जी, शंकर चाचा जी कह कर बुलाते हो हम भी उन्हें चाचा जी कहते है क्या

विद्यार्थी – नहीं

अध्यापिका जी – क्यों नहीं कहते

विद्यार्थी – क्योंकि वो तो बड़े है

अध्यापिका जी – बिलकुल ठीक क्यों की वो हमारी उम्र के है इसलिए हम उन्हें भाई जी कहते है जैसे आप सब एक उम्र के साथ साथ पढ़ते हो एक दूसरे को भाई जी – बहन जी कहते है

अध्यापिका जी – अच्छा बताओ जैसे हम आपको बेटा जी कहते है तो क्या आप भी हमको बेटा जी बोलते हो

विद्यार्थी – हा हा हा ऐसा थोड़ी होता है।

अध्यापिका जी – आप सब मुझे अध्यापिका जी क्यों बोलते हो

विद्यार्थी – क्योंकि आप हमको पढ़ाते हो

अध्यापिका जी – Very Good

विद्यार्थी – अच्छा बताओ आप सब मेरा नाम लेकर मुझे बुलाओगे तो कैसा लगेगा

विद्यार्थी – ऐसा होता ही नहीं है

अध्यापिका जी – क्यों नहीं होता

विद्यार्थी – अच्छा नहीं लगता

अध्यापिका जी – मैं आपको आपका नाम लेकर बुला सकती हूँ

विद्यार्थी – हाँ आप बुला सकते हो

अध्यापिका जी – क्यों में क्यों नाम लेकर बुला सकती हूँ जब आप मुझे नाम लेकर नहीं बुला सकते

विद्यार्थी – आप बड़े हो न इसलिए हमको तो घर में सब नाम लेकर ही बुलाते हैं

अध्यापिका जी – ऐसा क्या ! अच्छा एक बात सोच कर बताना की यदि मैं कहु अनन्त इधर आओ ! अनन्त बेटा जी इधर आइये आपको क्या अच्छा लगेगा

विद्यार्थी – बेटा जी इधर आइये

अध्यापिका जी– धवल बेटा जी अब आपका नं.

धवल ठीक से बैठो या धवल बेटा जी ठीक से बैठेंगे

विद्यार्थी – धवल बेटा जी ...

अध्यापिका जी – बढ़िया। अब मनन बेटा जी

मनन क्या कह रहे हो या मनन बेटा जी आप क्या कह रहे हो

विद्यार्थी – मनन बेटा जी

अध्यापिका जी – रक्षा बेटा जी आपका नं.

रक्षा होम वर्क किये हो या रक्षा बेटा जी आपने होम वर्क किया

विद्यार्थी – रक्षा बेटा जी –

अध्यापिका जी – आप सब समझ गये सम्बोधन किसे कहते हैं हम सब का एक नाम होता है और हम सब एक दूसरे के कुछ लगते हैं सम्बोधन से हमें पता लगता है की हमारा आपस में संबंध क्या है।

जैसे

– 1. आपकी मम्मी जी का एक नाम है पर आप उन्हें मम्मीजी कहते हो।

इससे हम सब जान जाते है की ये आपकी मम्मीजी हैं।

2. आप मुझे अध्यापिका जी कहते है मैं आपको बेटा जी कहती हूँ इससे सब जान जाते है की मैं शिक्षक हूँ आप मेरे विद्यार्थी है।

संबोधन सहयोग

अध्यापिका जी – बेटाजी आप सभी का सम्बोधन बहुत अच्छा है
क्या आप सब घर जाकर परिवार में अड़ोस – पड़ोस में सभी के साथ आपसे छोटे है, बड़े है, हम उम्र है सभी के साथ सही सम्बोधन के साथ बात करते हो

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी , करते है पर कभी – कभी छूट जाता है और कभी तो मैं जानबूझ कर भी नहीं बोलता

अध्यापिका जी – अरे ऐसा कैसे होता है

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी जब मेरे को गुस्सा आता है तो मैं सम्बोधन नहीं करती आप भी नहीं बोलती जी भी नहीं लगाती।

अध्यापिका जी – और भी बच्चो के साथ ऐसा होता है क्या ?

विद्यार्थी – 1. जी अध्यापिकाजी , मैं भी गुस्सा आने पर ठीक से बाते नहीं करता
2. अध्यापिकाजी, बार – बार बोलने पर भी जब कोई मेरी बात नहीं सुनता तब मैं चिल्लाकर बोलती हूँ उससे सम्बोधन बिगड़ जाता है

अध्यापिका जी – आपको कब अच्छा लगता है जब अच्छे से बात करते हो या जब चिल्ला कर बात करते हो

विद्यार्थी – जब अच्छे से बात करते है

अध्यापिका जी – बेटाजी आज मैं आपको बताती हूँ कि हमारा सम्बोधन क्यों बिगड़ता है
बेटाजी आप सब भाईजी, बहनजी साथ – साथ खुश होकर खेल पाओ यही एक–दूसरे का सहयोग है
जब – जब हम बिना लड़ाई – झगडे के खेलते है, खुश रहते है , हमारा संबोधन भी नहीं बिगड़ता इतना ही तो करना है

अध्यापिका जी – बताओ कौन – कौन बिना लड़ाई झगडे के खेलना चाहता है

अध्यापिका जी – अरे वाह। सभी बच्चें

अध्यापिका जी – आप सब मुझे बताओ कि आप लोग के बीच लड़ाई कब – कब होती है और क्यों होती है

विद्यार्थी – 1. अध्यापिकाजी, मैं जो खेल बोलती हूँ वो कभी नहीं खेलते

2. मैं सबका कहना मानती हूँ मेरा कोई नहीं मानता

3. हमेशा , मुझे ही दाम देना पड़ता है

4. अध्यापिकाजी मैं बहुत जल्दी आउट हो जाती हूँ , मैं कहती हूँ मुझे और खेलना है तो नहीं मानते

5. अध्यापिकाजी एक ही खेल खेलते है मैं बोर हो जाता हूँ

6. सभी बहनजी मिलकर लड़कियों वाले खेल खेलते है हम दोनों भाई जी अकेले पड़ जाते है

7. अध्यापिकाजी, हमें दौड़ने वाला खेल नहीं खेलना रहता , भाईजी हमेशा दौड़ने अला खेल बोलते है

अध्यापिका जी – अच्छा अब मैं आपको आप सबकी शिकायतों का एक उपाय बताती हूँ उसे अगली बार जब खेलो प्रयोग करके देखना

विद्यार्थी – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिका जी – अभी हम सब अपनी बात मनवाना चाहते है मेरे भाईजी – बहनजी क्या चाहते है वो बिलकुल नहीं सोचते अब अगली बार आप अपने भाईजी बहनजी की बात सुनो और खेलो

– आज अभी आप सब एक निर्णय लो कि हम सबको खुश होकर खेलना है, उसके लिए एक दूसरे का कहना मानना है फिर मुझे बताना कि आप सबका संबोधन कैसा रहा

अध्यापिका जी – ठीक है नमस्ते

विद्यार्थी – ठीक है अध्यापिकाजी नमस्ते

आज्ञापालन

अध्यापिका जी– नमस्ते बेटाजी आप सब कैसे है, मन खुश है, शरीर स्वस्थ है

विद्यार्थी – जी अध्यापिकाजी

अध्यापिका जी– अदिति बेटाजी आपको देखकर लगता है कि थोड़ा परेशान हो क्या बात है

अदिति – अध्यापिकाजी पेट दुख रहा है

अध्यापिका जी – पेट में दर्द है, आपके लिए अजवाइन का काढ़ा बनवाते है आप काढ़ा पी लेना, थोड़ा आराम करना ठीक हो जायेगा

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी , मैं कॉपी लाना भूल गई

अध्यापिका जी– कैसे भूल गये बेटाजी

विद्यार्थी – अध्यापिकाजी , कल मैं होमवर्क की फिर खेलने चली गई सुबह जल्दी – जल्दी में रह गई

अध्यापिका जी – बेटाजी , आप सबसे विद्यालय में सभी अध्यापिकाजी ये बात समझाती है कि अपनी कॉपी , पेन्सिल , रबर सब वस्तु को ध्यान से रखो घर में मम्मीजी समझाती है कि बेटाजी अपना बैग, बॉटल, जूते, चप्पल ध्यान से रखो बार – बार, बार – बार बालती है क्यूँ ?

विद्यार्थी – नहीं तो हमारी चीजें नहीं मिलती और हमको परेशानी होती है

अध्यापिका जी– एकदम ठीक बेटाजी जब हमारी वस्तु सही जगह पर सुरक्षित नहीं होती तब हमें समय पर मिलती नहीं है , अव्यवस्था हो जाती है

अध्यापिका जी – बेटाजी , अभी तक आप सबने समझा संबोधन करना है, सहयोग करना है आज हम समझेंगे आज्ञापालन

अध्यापिका जी – माता–पिता और अध्यापकजी का कहना सुनना , मानना और वैसा ही करने से बच्चे सुखी और स्वस्थ्य होते है

जैसे –१. मम्मीजी आपसे कहती है बेटाजी ये मत खाना, ये वस्तु आपके शरीर के लिए ठीक नहीं है क्योंकि मम्मीजी तो आपके शरीर के बारे में सब जानती है

२. बेटाजी आप इतनी देर खेल कर वापस आ जाना नहीं तो थक जाओगे हम कभी समय पर वापस आ जाते है कभी नहीं आते

	३. मम्मीजी आपसे कहती बेटाजी अपनी चीजो को जगह पर रखो नहीं तो आपको मिलेगी नहीं
	आप कभी रखते हो, कभी नहीं रखते
अध्यापिका जी–	क्या ऐसा होता है
विद्यार्थी –	जी अध्यापिकाजी , ऐसा ही होता है
अध्यापिका जी–	ठीक है तो अब आप सब इस बात पर ध्यान देकर मुझे बताना कि जब
–	जब अपने मम्मीजी का कहना माना तब क्या हुआ और जब – जब नहीं माना तब क्या हुआ
	ठीक है यही आज का होमवर्क है
अध्यापिका जी–	नमस्ते बेटाजी Good Morning
विद्यार्थी –	नमस्ते, Good Morning अध्यापिकाजी
विद्यार्थी –	अध्यापिकाजी कल मैंने घर जाकर अपनी सभी चीजे जगह पर रखी थी मम्मीजी खुश हो गयी थी
अध्यापिका जी –	Very Good बेटाजी यही तो सही जीना कहलाता है कि हम भी खुश हो हमारे अपने भी खुश हो और हमारी वस्तु भी सुरक्षित हो
विद्यार्थी –	अध्यापिकाजी मैं भी कल ध्यान देकर कहना मान रही थी , मम्मीजी ने कहा बेटाजी बहुत देर हो गयी है अब टीवी बंद करो मुझे आपकी बात याद आ गयी तो मैंने कहा जी मम्मीजी बस 2 मिनिट में बंद करती हूँ और मैंने बंद कर दिया मम्मीजी खुश हो गये
विद्यार्थी –	अध्यापिकाजी कल आपने कहा था काढा पीने, मम्मीजी भी बोलती है हमेशा पर मै नहीं बोल देती हूँ पर आज जब मम्मीजी बोले मैं तुरन्त हाँ बोली मम्मीजी खुश हो गए बोले कि अरे वाह
अध्यापिका जी –	बहुत बढ़िया बच्चो इस पूरे सप्ताह आप सब इस अभ्यास को करना
–	आप सबने मेरा कहना माना और होमवर्क पूरा किया यही तो आज्ञापालन है और आप सब ने अच्छी बात को सुना उसके लिए आप सभी का धन्यवाद।
	नमस्ते बेटा जी...

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – बेटा जी नमस्ते, सभी बच्चों को नमस्ते। आपको भी नमस्ते, आपको भी नमस्ते।

बालक – नमस्ते अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – खुश रहो बेटा जी।
चलिये अपनी कक्षा में चलते हैं।
हाथ पकड़ेंगे मेरा या अपने आप चलेंगे?

बालक – मैं पकडुँगा।
मैं अपने आप।

अध्यापिकाजी – बेटा जी क्लास में जाने से पहले हम सब अपने जूते–चप्पल लाइन से लगायेंगे, ठीक रहेगा।

बालक – ठीक है।

अध्यापिकाजी – लाइये बेटा जी मै लगा दूँ

बालक – नहीं मैं लगाऊँगा।
मैं भी अपने आप लगाऊँगा।
ये मेरी चप्पल के ऊपर रख दिये

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं बेटा जी अभी हम सीख रहे हैं।
– चलिए एक–एक करके रखते हैं।

बालक – हाँ ठीक है।

अध्यापिकाजी – देखो बच्चों कितना सुन्दर दिख रहा है। आपको कैसा लग रहा है?

बालक – अच्छा लग रहा है। रोज लगायेंगे।

अध्यापिकाजी – जरूर... हम रोज अपनी चप्पलें लाईन से लगायेंगे। अब क्लास में चलते है।

बालक – चलो... चलो... चलो...

अध्यापिकाजी – सबसे पहले मैं अपना बैग अपनी जगह पर रख देती हूँ।
– आप सब भी जहाँ बैठे हैं वहाँ अपना–अपना बैग रख लीजिए।
– Good... कितनी जल्दी समझते हैं बेटा जी
आप सब, आप लोगों के साथ मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – अरे, वाह बेटाजी, आज तो आप बहुत अच्छे लग रहे हैं। आपके बालों में तेल लगाकर इतनी सुदंर कंघी किसने की है?

बालक – मम्मीजी ने।

अध्यापिकाजी – आपके नाखुन किसने काटे हैं?

बालक – पापा जी ने।

अध्यापिकाजी – आज आप कितने साफ–सुधरे लग रहे हैं, बेटाजी।

बालक – हॉ।

अध्यापिकाजी – आपके कपड़े कौन ले कर आया?

बालक – पापा जी, मम्मी जी।

अध्यापिकाजी – आपके मम्मी जी, पापा जी बहुत अच्छे हैं। बेटा जी, आप घर जाकर कहना कि आप बहुत अच्छे हो।

बालक – हॉ बोलूँगा।

अध्यापिकाजी – क्या बात है बेटा जी, आज आप उदास हैं, अच्छा नहीं लग रहा है?

बालक – आज मम्मी जी ने मुझे मारा है।

अध्यापिकाजी – बेटा जी मम्मी जी बच्चो को कभी नही मारते, मम्मीजी तो थपकी देते है

बालक – थपकी? थपकी क्या होती है?

अध्यापिकाजी – देखो जैसे मैंने धीरे से आपके गाल मे थपकी दी, इसको मारना बोलेंगे क्या?

बालक – नही, मुझे तो दर्द नहीं हुआ।

अध्यापिकाजी – हाँ बस इसे ही थपकी कहते है और यह थपकी मम्मी जी कई बार आपको देती हैं।

– आपको थपकी देकर सुलाती हैं।

– थपकी देकर उठाती हैं।

– आप खाना नहीं खाते तो थपकी देकर खाना खिलाती हैं।

– आप सुनते नहीं हो तो थपकी देकर आपको बात सुनने कहती हैं।

बालक – समझ गया, मम्मीजी ने मुझे मारा नहीं था, थपकी दी थी।

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – आप सब विद्यालय बहुत खुश हो कर आए हैं।

– बताइए आप सब इतने खुश खुश कैसे हैं?

बालक – 1. कल मैं जंगल सफारी गया था।

2. पापा जी मेरे लिए नई बोतल लाए।

3. आज मैं ABCD लिखकर लाया।

4. मेरे पास नया बैग है।

5. टिफिन में आलू पराठा है।

6. मैं पापा जी को पानी दिया, पापा जी Very good बोले

अध्यापिकाजी – Very Very good बच्चों इतनी अच्छी अच्छी बातें इतने अच्छे अच्छे काम करके

खुश तो होना ही है। आपको पता है :–

अच्छी–अच्छी सोच और

अच्छी–अच्छी बात

अच्छी–अच्छी बात और अच्छे अच्छे काम

यही तो है बच्चे बूढ़े और बड़ों का काम

अध्यापिकाजी – चलो सब मिलकर गाते हैं

अच्छी–अच्छी सोच और

अच्छी–अच्छी बात

अच्छी–अच्छी बात और अच्छे–अच्छे काम

यही तो है बच्चे बूढ़े और बड़ों का काम

बालक – अध्यापिका जी पानी पी लूँ?

अध्यापिकाजी – पी लीजिए बेटा जी।

बालक – मुझे भी प्यास लगी है।

अध्यापिकाजी – आप भी पी लीजिए बेटा जी।

बालक – अध्यापिका जी बॉटल नहीं है

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं आप मेरी बोतल से पी लीजिए।

बालक – अध्यापिका जी मैं दे दूँ?

अध्यापिकाजी– Good जरूर बेटा जी यह तो अच्छी बात है चलिए अच्छी बात के लिए हम सब Clapping करेंगे, और बेटा जी आप पानी पीकर भाई जी से क्या कहेंगे? Thank You भाई जी, क्या कहेंगे?

बालक – Thank You भाई जी

अध्यापिकाजी– Very good, Most Welcome बेटा जी

– बच्चों चलिए अब हम अपने बैग से स्लेट, पेंसिल निकालेंगे आराम से बेटा जी धीरे–धीरे आराम से निकालेंगे जब काम हो जाएगा तब आराम से अच्छे से वापस रखेंगे ऐसा हम प्रतिदिन करेंगे।

अध्यापिकाजी– हम सब विद्यालय क्यों आते हैं? कौन बताएगा ?

बालक – पढ़ने

बालक – ABCD पढ़ने

बालक – अच्छे बच्चे बनने

बालक – 1 2 3 पढ़ने

अध्यापिकाजी– Very good, बच्चों विद्यालय हम समझने और सीखने आते हैं।

सार्थक संवाद

अध्यापिकाजी – बेटा जी जैसे अ से अम्मा होता है आपने अम्मा यानि मम्मीजी को समझा।
– मम्मीजी क्या–क्या करती है ये समझा।
– आज हम समझेंगे आ से 'आदर'।
– आदर किसे कहते है कोई बतायेगा।

बालक – मम्मीजी कहती है बड़ो का पैर छूते हैं, बड़ों का आदर करते है।

बालक – अध्यापिका जी का आदर करना, उनको प्रणाम करना।

अध्यापिकाजी – बहुत अच्छा बेटाजी, आपकी मम्मी जी कितनी अच्छी बात बताती हैं, उनका भी आदर करना।
– उसी में जोड़ते हुये मैं भी बताऊ कि आदर किसे कहते हैं?

बालक – जी अध्यापिकाजी।

अध्यापिकाजी – बेटा जी अभी आप सब छोटे बच्चे हैं अभी तो बहुत कुछ सीखना है समझना है।

बालक – सीखने–समझने के लिए बड़ों का कहना सुनना होता है।

अध्यापिकाजी – पापाजी आपसे कुछ कहें जैसे – बेटाजी एक ग्लास पानी ला दो तब आप कहो अभी लाता हूं और अपना सब काम छोड़ कर पानी ला कर दिये ये पापाजी का आदर है।
अध्यापिका जी की बात सुनना अध्यापिकाजी का 'आदर' है।

बालक – अध्यापिकाजी मैं कहना मानती हूं।

बालक – मैं कभी कभी मानता हूं

अध्यापिकाजी – कोई बात नहीं बेटा जी जब आपको समझ आयेगी तब आप हमेशा करोगे।
कौन – कौन 'आदर' किसे कहते है समझ गया?

बालक – मैं .... मैं .... मैं

अध्यापिकाजी – कैसे करेंगे?

बालक – कहना मानेंगे

अध्यापिकाजी – बहुज अच्छा बच्चों आप सबसे बात करके मुझे बहुत खुशी मिलती है।जानते हो क्यों ....

बालक – क्यों ....

अध्यापिकाजी – क्योंकि आप मेरी बात सुनते हो और मानते भी हो, इसका मतलब मेरा आदर करते हो
आदर से मैं खुश होती हूं।
मम्मीजी पापाजी का आदर करना, वो भी खुश हो जायेंगे।
तो बोलो आ से "आदर" करेंगे

अध्यापिकाजी – आप सब सुनते हो?

बालक – जी अध्यापिका जी

बालक – सब बात सुनते है।

अध्यापिकाजी – सब बात सुनते है पर बात मानते कितनी हैं?

बालक – ....?

अध्यापिकाजी – सुनना और सुनकर मानना दोनो अलग – अलग है।

जैसे :– मम्मा जी ने कहा

1) बेटा जी उठो आपने सुना ....

2) फिर कहा बेटा जी उठो, फिर सुना ....

3) बार – बार कहा उठो बेटा जी बस आ जायेगी आप तैयार नहीं हो पाओगे।

आपने फिर सुना ....

– सुना तो बहुत बार .... माना कितनी बार में

बालक – हम्म

अध्यापिकाजी – 1) मम्मा जी ने कहा बेटा जी अब खेलना बहुत हो गया खिलौने उठा कर रख दो।

2) मम्मा जी ने कहा बेटाजी अब टी.व्ही. बन्द कर दो।

आप सब सुनते है पर सुनकर मानने वाला काम कितने बार में करते हो ये ध्यान देना ठीक है रोज पूछूंगी आप सबसे ....

बालक – हम नहीं सुनते हैं तब मम्मीजी डाँटते हैं।

अध्यापिकाजी – तो बच्चों यदि आप मम्मीजी का कहना सुनोगे भी और मानोगे भी तो यदि आप मम्मी जी का कहना सुनोगे भी और मानोगें भी तो यही 'आदर करना' है। बड़ो का कहना मानना ही उनका 'आदर' है।

अध्यापिकाजी – आप सबने मेरी बात ध्यान से सुनी इसके लिए Thank you बेटा जी

सार्थक संवाद

अधयापिका जी – नमस्ते बच्चों, कैसे हो? सब खुश होकर विद्यालय आये हो?

बालक – जी अध्यापिका जी

अध्यापिका जी – आज आप सब क्या नाश्ता किये, मम्मी जी क्या – क्या बनाये थे?

बालक – मैं पराठा खाकर आई।

मैं सैंडविच लाई हूँ।

मैं Cookies लाई हूँ।

मुझे मम्मा जी ने आलू पराठा दिया है।

अध्यापिकाजी मै रोटी–सब्जी लाया हूँ।

मैं लड्डू और काजू कतली लाया हूँ।

अध्यापिका जी कल छुट्टी है, तो मम्मा जी समोसा बनायेंगी, मुझे समोसा बहुत पसन्द है।

अध्यापिका जी – अरे वाह बेटा जी, आप सब की मम्मी जी कितना अच्छा नाश्ते की तैयारी करती हैं। अच्छा बताओ तो पराठा कैसा दिखता है?

बालक – गोल–गोल

अध्यापिका – आपकी मम्मी जी पराठा गोल बनाती हैं, मैं त्रिकोण बनाती हूँ, चौकोर भी बना सकती हैं। जैसे –

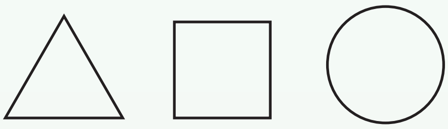

पराठा हम चाहे जैसे आकार में बना सकते हैं।

बालक – मेरी मम्मीजी गोल बनाती हैं।

अध्यापिका – ठीक है, कल मैं घर से बना कर लाऊंगी और आप सबको दिखाऊंगी, मैं त्रिकोण बनाती हूँ। ठीक है।

अध्यापिका – और त्रिकोण आकार (Triangle Shape) की क्या–क्या चीजें होती हैं बताओ?

बालक – अध्यापिका जी मेरे को (Triangle Shape) बहुत पसन्द है क्योंकि समोसा Triangle Shape का होता है।

अध्यापिका – Good... समोसा

बालक – सैण्डविच।

अध्यापिका – Ok आप कह रहे हैं कि मम्मा जी जो सैंडविच बनाती हैं उसे जब बीच से काटते हैं तब वो Triangle दिखती है। Good...

अध्यापिका – वैसे Bread कौन से Shape की होती है।

बालक – Square वर्ग/चौकोर

अध्यापिका – Good Square होती है, उसे चौकोर भी कहते हैं। और Square चीजे कौन – कौन सी है।

बालक – Stool

बालक – Switch Board

बालक – Tiles

अध्यापिका – Good

अध्यापिका – ये कौन सा Shape है।

बालक – Rectangle आयत

अध्यापिका – अरे वाह बेटाजी आपको तो सब पता है। आपको किसने बताया?

बालक – मम्मा जी।

अध्यापिका – Rectangle चीजे कौन–कौन सी दिख रही हैं बताओ घर में या कक्षा में?

बालक – Slate ।

बालक – Mobile अध्यापिका जी।

बालक – ये Book भी Rectangle है।

बालक – कॉपी भी।

बालक – अपना बोर्ड भी Rectangle है।

बालक – पेंसिल बॉक्स।

बालक – पापा जी का सूटकेस।

बालक – मम्माजी का पर्स भी।

बालक – TV ।

अध्यापिकाजी – Very very good, clapping करते हैं, आप सबके लिए बहुत बढ़िया बच्चों, आप सब चीजों को ध्यान से देखते है। ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

अध्यापिकाजी – 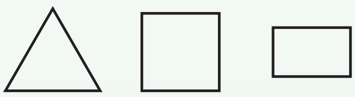

ये तीनों Shape आप लोगों ने बताए, और कौन–सा Shape आप देखते हैं?

बालक – Circle (वृत्त) 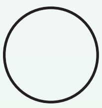

बालक – Round (गोल)

बालक – गोल गोल रोटी।

बालक – गाड़ी का चक्का गोल।

बालक – सूरज गोल।

बालक – Pizza गोल।

बालक – Cookies गोल।

बालक – मम्मीजी की बिन्दी गोल।

बालक – पैसा गोल।

बालक – आँख के अंदर काला गोल।

अध्यापिकाजी – खुश कर दिए बच्चों, कितना कुछ पता है आप लोगों को।

अध्यापिकाजी – बहुत बढ़िया, आज आपने जाना Shape के बारे में

बालक – अध्यापिकाजी Oval अंडाकार भी होता है।

बालक – Semi Circle अर्धवृत भी होता है।

अध्यापिकाजी – बेटाजी अभी आप ये चार आकार (Shape) को अच्छे से पहचानते हैं फिर बाकी आकारों (Shape) पर आप ध्यान देते रहना, हम लोग आगे बात करेंगे, ठीक है।

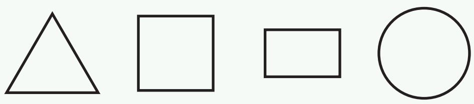

बालक – जी, अध्यापिकाजी।

सार्थक संवाद

मेरी आवश्यकता

अध्यापिकाजी	–	नमस्ते बच्चों कैसे हो आप सब
बालक	–	नमस्ते अध्यापिकाजी अच्छे है।
अध्यापिकाजी	–	बेटाजी आपको सर्दी हो गई है, देखो नाक बह रही है। आपकी बैग मे रूमाल नही है।
बालक	–	मम्मीजी ने नही दिया
अध्यापिकाजी	–	कोइ बात नही, विद्यालय में है मैं साफ कर देती हूँ। मम्मी जी को सुबह–सुबह कितने काम होते है वो भूल गई होगी। कोई बात नही आप घर जाकर मम्माजी को मत कहना कि आप रूमाल देना भूल गये थे।
बालक	–	क्यों अध्यापिकाजी, क्यो नहीं बोलेंगे।
अध्यापिकाजी	–	बेटाजी मम्माजी इतन कुछ करते है आपके लिए, वो बताना पर कभी–कभी कुछ करना भूल जाये तो सोचना कोई बात नही मम्मा भी तो थक जाती है।
बालक	–	हाँ मम्माजी दिन भर काम करते है।
अध्यापिकाजी	–	तो क्या आप सहयोग करना चाहते है?
बालक	–	जी अध्यापिकाजी
अध्यापिकाजी	–	आप सब टिफिन रोज लाते हो ?
बालक	–	जी अध्यापिकाजी
अध्यापिकाजी	–	कभी नही भूलते ?
बालक	–	नही, मम्मी देती है।
अध्यापिकाजी	–	क्यो नही भूलते
बालक	–	मुझे भूख लगती है।
अध्यापिकाजी	–	ठीक बात है आपको पता है कि भूख लगेगी तब टिफिन चाहिए इसलिए हम नहीं भूलने मम्माजी भी नहीं भूलते उनको पता है आपकी आवश्यकता।

अध्यापिकाजी	–	अब ये बताओ कि सर्दी किसको हुई है?
बालक	–	मुझे
अध्यापिकाजी	–	तो रूमाल किसकी आवश्यकता है।
बालक	–	मेरी
अध्यापिकाजी	–	Good बेटाजी जैसे भूख लगने पर भोजन आपकी आवश्यकता है प्यास लगने पर पानी आपकी आवश्यकता है वैसे ही सर्दी होने पर रूमाल आपकी आवश्यकता है। है न!
बालक	–	जी अध्यापिका जी
अध्यापिकाजी	–	कौन बतायेगा की यदि मेरी आवश्यकता है तो मुझे क्या करना होगा
बालक	–	याद रखना होगा रूमाल बेग मे है या नही
अध्यापिकाजी	–	Very Good बेटाजी बहुत समझदार बच्चे हो आप सब
बालक	–	हुम्म
अध्यापिकाजी	–	सुबह – सुबह मम्माजी को ढेर सारे काम होते है 1) आपको उठाना 2) नहलाना 3) नाश्ता बनाना 4) बेग तैयार करना 5) पानी बॉटल में भरना रूमाल 6) रूमाल जूता चप्पल सब याद करना बताओ इसमें से आप क्या–क्या सहयोग कर सकते हो'
बालक	–	क्या–क्या
अध्यापिकाजी	–	सोचो............सोचा ध्यान दो
बालक	–	आप बताओ अध्यापिकाजी
अध्यापिकाजी	–	चलो मैं इसमें आपकी मदद करती हूं। 1. आप रात को ही अपना बेग तैयार कर सकते हो' 2. जो भी वस्तु आपके बेग से निकल गई है या इधर–उधर पड़ी है सबको एकत्र कर सकते हो'

3. कॉपी, पुस्तक, पैन्सिल, रबर, स्लेट पोछने का कपड़ा, रूमाल, एक जोड़ी कपड़ा अपना सब सामान सोने से पहले बैग में डाल सकते हो।

ये बहुत बड़ा सहयोग होगा मम्मा जी को

बालक – ये अब मैं करूंगा

बालिका – मैं भी कर सकती हूं

बालक – मेरी मम्माजी बोलती है मैं कर दूंगी तुमसे नही होगा

अध्यापिकाजी – आप अपनी मम्माजी से कहना कि अब से मैं अपने काम खुद करने का अभ्यास करूंगा।

अध्यापिकाजी – कौन–कौन करेगा हाथ उठाओ

बालक – सबने हाथ उठाये अध्यापिकाजी

अध्यापिकाजी – अच्छे बच्चे हो आप सब

इस वर्ष P.P.-2 में आप सब खुद से 5 काम करोगे

1. अपनी तरफ से नमस्ते करना।

2. जूते चप्पल लाईन से रखना।

3. अपना बैग सोन से पहले तैयार करना।

4. हाथ धोकर भोजन करना।

भोजन करके अपना बरतन खुद उठाकर रखना।

सार्थक संवाद

स्वाद की पहचान

अध्यापिका जी	–	नमस्ते बच्चों कैसे हो खुश हो स्वस्थ हो सबने काढ़ा पिया
बालक	–	अध्यापिकाजी अजवाइन का काढ़ा तीखा लगता है।
बालक	–	नहीं – नहीं मीठा था।
बालक	–	तीखा था न
बालक	–	मीठा था
अध्यापिका जी	–	अच्छा चलो आज हम कितने प्रकार के स्वाद होते है उसे समझते है।
अध्यापिकाजी	–	अजवाइन के काढ़ा में दो चीज डलती है अजवाइन और गुड़
	–	बताओ इसमें गुड़ का स्वाद कैसा रहता है।
बालक	–	मीठा
अध्यापिकाजी	–	सबको मीठा लगता है गुड़
बालक	–	जी अध्यापिका जी मीठा – मीठा गुड़
अध्यापिकाजी	–	अजवाइन का स्वाद थोड़ा तीखा थोड़ा नमकीन रहता है इसलिए मौसीजी उसमें गुड़ मिलाते हैं।
बालक	–	अध्यापिका जी मुझे छुट्टी के समय नींबू पानी मिलता है न वो अच्छा लगता है।
अध्यापिकाजी	–	क्यों अच्छा लगता है।
बालक	–	खट्टा – मीठा होता है।
अध्यापिकाजी	–	नींबू पानी खट्टा मीठा कैसे बनता है।
बालक	–	नींबू खट्टा होता है। उसमें मौसीजी शक्कर डालते है।
अध्यापिकाजी	–	शक्कर का स्वाद कैसा रहता है।
बालक	–	मीठा – मीठा
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा आपको पता है कि नींबू का स्वाद खट्टा और शक्कर का स्वाद मीठा
अध्यापिकाजी	–	अच्छा बताओ जैसे नींबू खट्टा लगता है वैसे ही और कौन – कौन सी चीज आपको खट्टी लगती है।
बालक	–	इमली
बालक	–	खट्टा आम
बालक	–	खट्टी भाजी
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया
	–	और मीठी चीज कौन – कौन सी है।

बालक	–	रसगुल्ला
	–	मिठाई
	–	खीर
	–	पेड़ा
	–	लड्डू
अध्यापिकाजी	–	आप सबने जितनी चीजे बताई वो मीठी होती है या मीठी बनाई जाती है।
बालक	–	बनाते है।
अध्यापिकाजी	–	कैसे
बालक	–	पता नहीं
अध्यापिकाजी	–	शक्कर मिला कर
बालक	–	हां – हां
अध्यापिकाजी	–	अब कुछ ऐसी मीठी चीज बताओं जिसमें गुड़ या शक्कर नहीं डालते फिर भी वो मीठी होती है।
बालक	–	आम
बालक	–	केला
बालक	–	सेब
बालक	–	अनार
बालक	–	कलिन्दर
बालक	–	अंगूर
अध्यापिकाजी	–	बहुत बढ़िया good और..........
बालक	–	बस
अध्यापिकाजी	–	किशमिश, खजूर, शहर............और मम्मीजी से पूछकर आना ठीक है।
अध्यापिकाजी	–	और कौन सा स्वाद होता है
बालक	–	मिर्ची
अध्यापिकाजी	–	हां बेटाजी उसे तीखा स्वाद कहते हैं। मिर्ची कैसी होती है–
बालक	–	तीखी–तीखी

अध्यापिकाजी	–	और स्वाद बताओ करेला कौन खाता है
बालक	–	मैं नही खाता
बालक	–	मैं भी नही
बालक	–	मैं खाती हूं अध्यापिकाजी
अध्यापिकाजी	–	कैसा स्वाद है
बालक	–	कडुवा
अध्यापिकाजी	–	बहुत अच्छा एक स्वाद है कडुवा
बालक	–	मैं सुबह नीम की पत्ती खाती है वो भी कड़वी होती है।
अध्यापिकाजी	–	अब बस एक स्वाद बचा है बताओ। हमारे विद्यालय में उसका पेड़ है हॉल के आस पास सब ढूंढ – ढूंढ कर खाते हो। गोल – गोल, छोटा – छोटा, हरा – हरा
बालक	–	आंवला अध्यापिका जी
अध्यापिकाजी	–	सही पहचाना बेटा जी आंवला
अध्यापिकाजी	–	बताओ आंवला का स्वाद कैसा होता है
बालक	–	खट्टा
बालक	–	तीखा
बालक	–	उसके ऊपर पानी पीने से मीठा लगता है।
अध्यापिकाजी	–	बेटा जी आंवला न खट्टा होता है न मीठा, न नमकीन न तीखा न कडुवा होता है। आंवला का स्वाद कसैला होता है।
अध्यापिकाजी	–	हम जीभ से छः प्रकार का स्वाद लेते है खट्टा – मीठा, तीखा, कडुवा, नमकीन, कसैला

खूब बढ़िया क्लास हुई आज तो आप सब के लिए
ताली बजानी चाहिए
चलो बजाते है।

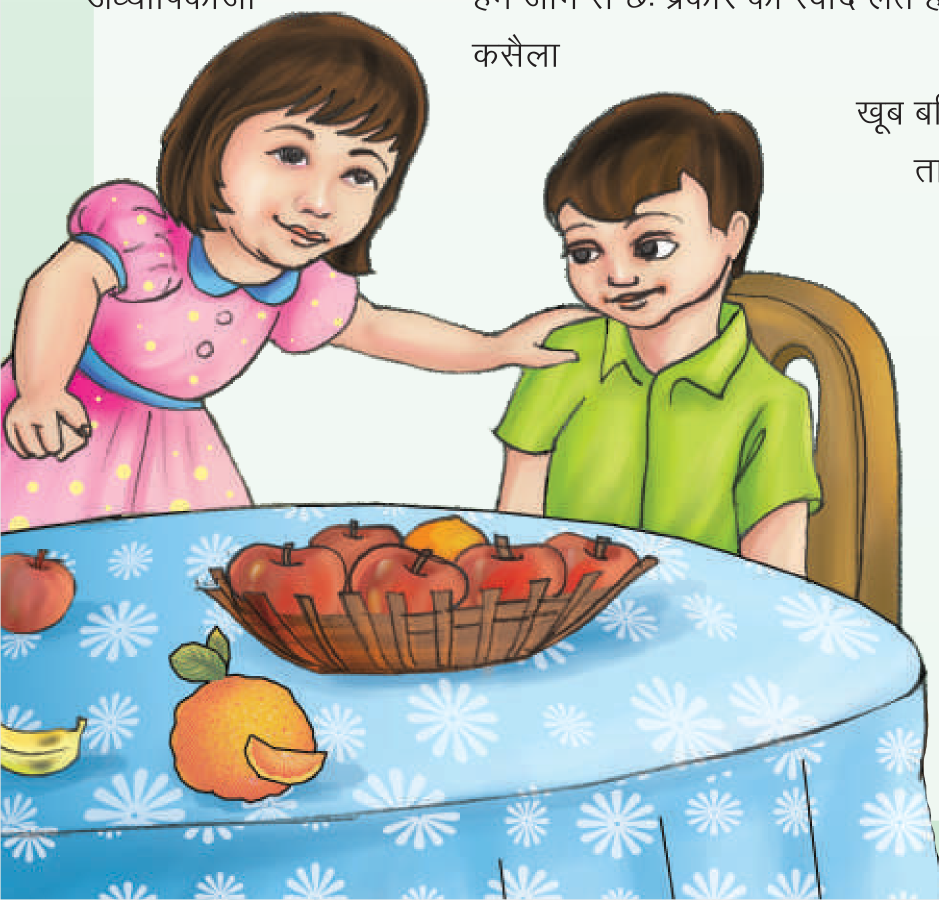

शरीर

शरीर की उपयोगिता

1. समझने के लिए सीखने के लिए

2. समझे हुये , सीखे हुये को करने के लिए

समझना /सीखना कैसे होगा

ज्ञानेन्द्रियों से

ज्ञानेन्द्रि किसे कहते है

ज्ञान + इन्द्रिय

समझ + शरीर के अंग अवयव

शरीर के वे अंग अवयव जिससे हम समझते है, सीखते है वे अंग अवयव कौन–कौन से है?

1. आँख 2. नाक 3. कान 4. जीभ 5. त्वचा

इन अंगों से कौन–कौन सी क्रिया होती है

आँख से रूप को देखना

नाक से गंध को सुँघना

कान से शब्द को सुनना

जीभ से स्वाद को चखना

त्वचा से स्पर्श या छूना

आँखे

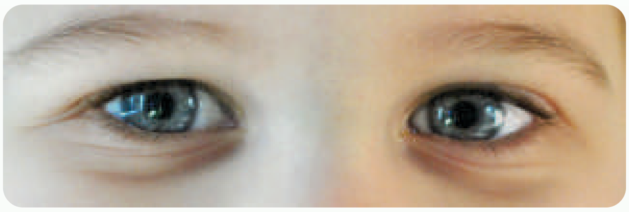

देखना

ध्यान से देखना

ध्यान से देखकर सीखना और समझना
1. विद्यालय में या घर में कोई वस्तु
गिरी पड़ी है उसे देखना, कचरा है
या कोई उपयोगी वस्तु।
2. लाइट, पंखा चालू है, देखना कि व्यर्थ
तो नहीं चल रहा है।
3. चलते समय पत्थर, गड्ढ़े सब देखना

अच्छा सोचना

कचरा है तो उसे उठाकर डस्टबिन में डाल दूँ!

उपयोगी वस्तु है तो उसे उठाकर रख दूँ!
अगर व्यर्थ चल रहा हो तो लाइट पंखा बन्द कर दूँ।
अगर सड़क पर पत्थर, गड्ढ़े हों तो संभलकर चलूँ।

अच्छा करना

देखना सही होने पर शरीर की सुरक्षा होती है और सदुपयोग होता है।

देखकर → समझकर → सोचकर → सही करना

कान

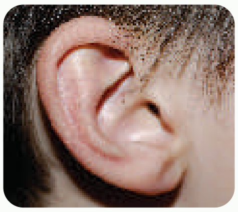

↓

सुनना

↓

ध्यान से सुनना

↓

शब्द , ध्वनि आवाज

1. माताजी नहाने , भोजन करने, सोने बुला रही है
2. भाईजी, बहनजी खेलने या सहयोग के लिए बुला रहे है
3. अध्यापिकाजी सीखाने, समझाने बुला रही है

↓

सुनकर अच्छा सोचना

1. माताजी मेरे शरीर के पोषण के लिए बुला रही हैं
2. भाईजी बहनजी साथ में खुश होने के लिए बुला रहें हैं
3. अध्यापिकाजी सीखाने, समझाने बुला रही हैं

↓

अच्छा सोचकर अच्छा करना

अव सुनकर → समझकर → सोचकर → सही करना

नाक

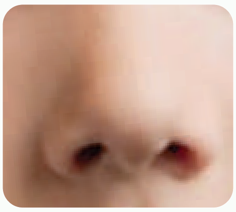

सूंघना

ध्यान से सूंघना

सुगंध है अच्छी है

दुर्गन्ध है अच्छी नही है

जानना समझना

उपयोगी है
1. औषधी
2. काढ़ा
3. सब्जीयाँ
4. फल
5. दूध , दही, घी

उपयोगी नही है
1. खाने की वस्तु ————————सुगंध
2. कपड़े ——————————————— सेंट
3. शरीर मे सुंगन्ध दिखाना डियोडेन्ट
4. घर में सुगन्ध लगाना रूम फ्रेशनर

अच्छा सोचना

कभी गंध अच्छी भी नही लगती पर शरीर के लिए उपयोगी है।

गंध अच्छी लगती है पर शरीर के लिए उपयोगी है।

अच्छा करना

अब सूंघना पूरा हुआ

सुँघकर → समझकर → सोचकर → सही करना

जीभ

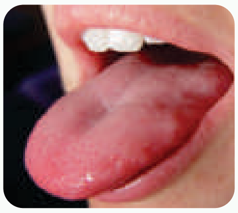

↓

चखना, स्वाद लेना

↓

ध्यान से चखना

↓

खट्टा है, मीठा है, तीखा है
नमकीन है, कसैला है, कड़ुवा है

↓

समझना
खट्टे स्वाद को जानना
मीठे स्वाद को जानना
तीखे स्वाद को जानना
नमकीन स्वाद को जानना
कड़ुवे स्वाद को जानना
कसैले स्वाद को जानना

↓

माताजी–पिताजी व गुरूजनों की मदद लेना

↓

अच्छा सोचना

↓

मेरे शरीर के लिए उपयोगी सभी स्वाद को भोजन में लेना है

↓

चखकर ➡ समझकर ➡ सोचकर ➡ सही करना

त्वचा

↓

स्पर्श होना

↓

कड़ा है नरम है

↓

जानना

1. खाने में कोई वस्तु आ गई
कंकर है, पत्थर है, कच्चा चना है, मटर है
2. चलने के समय पैरों के नीचे
गिट्टी है, रेती है, घास है, मारबल है
3. सोने के समय जमीन है, दरी है
गद्दा है तखत है
4. कपड़ा पहनने के समय सूती है
टेरीकोट है, सिन्थेटिक है, रेशमी है

↓

माताजी–पिताजी व अध्यापिका जी की मदद से

↓

समझकर अच्छा सोचना

↓

जो स्पर्श शरीर के लिए उपयोगी है उसका चयन करना

↓

छूकर → समझकर → सोचकर → सही करना

कर्मेन्द्रियाँ

कर्मेन्द्रि किसे कहते हैं?

कर्म – इन्द्रिय

↓ ↓

कार्य शरीर के अंग अवयव

शरीर के वे अंग अवयव जिससे कार्य होते हैं

कार्य करने वाले अंग–अवयव कौन–कौन से हैं?

1. हाथ 2. पैर 3. मुँह 4. मूत्र इन्द्रिय 5. गुदा

इन अंगों से कौन–कौनसे कार्य होते हैं

1. मुँह – मुँह से खाना खाते हैं, बोलते हैं

2. हाथ – हाथ से सभी काम करते हैं

3. पैर – पैर से चलते हैं, श्रम भी करते हैं

4. मूत्रेन्द्रिय – हम जो पानी पीते हैं उससे हमारी प्यास बुझती है और खाना पचान में पानी का उपयोग होता है, खाना पचने के बाद जो पानी बचता है जो हमारे शरीर के लिए उपयोगी नहीं है व मूत्र–इन्द्रिय द्वारा शरीर के बाहर निकल जाता है जिसे मूत्र कहते हैं।

5. गुदा – हम जो भोजन करते हैं वह पेट में पानी की मदद से पचता है, पचा हुआ भोजन शरीर के लिए उपयोगी हो जाता है जो भोजन बच जाता है नहीं पचता वह गुदा द्वारा शरीर के बाहर निकल जाता है जिसे मल कहते हैं।

हमारी आवश्यकता

आज कक्षा में अध्यापिका जी ने नया पाठ शुरू किया ।

विद्यार्थी	–	प्रणाम अध्यापिका जी।
अध्यापिका जी	–	खुश रहों, बेटाजी। आज मैं आप लोगों को हमारी आवश्यकताओं के बारे में बताऊँगा । हमारी आवश्यकताऐं दो प्रकार की होती है– सामान्याकांक्षा एवं महत्वकांक्षा
विद्यार्थी	–	अध्यापिका जी, सामान्याकांक्षा क्या होती है
अध्यापिका जी	–	बेटाजी, सामान्याकांक्षा का अर्थ है हमारी वे आवश्यकताऐं जिनके बिना हम जीवित नहीं रह सकते।
विद्यार्थी	–	अध्यापिका जी, कौन–कौन सी आवश्यकताऐं है जिनके बिना हम जीवित नही रह सकते।
अध्यापिका जी	–	सबसे पहली आवश्यकता है 'आहार' –कौन बतायेगा हम भोजन क्यों करते है ?
विद्यार्थी 1	–	भूख लगती है इसलिए भोजन करते है।
विद्यार्थी 2	–	भोजन करने से ही शरीर में ताकत आती है।
विद्यार्थी 3	–	माताजी कहती है भोजन नहीं करोगें तो ताकत कहाँ से आयेगी। बड़े कैसे होगें।
अध्यापिका जी	–	बहुत बढ़िया। भोजन नहीं करेगें तो शरीर कमजोर हो जायेगा, ताकत नहीं रहेगी, धीरे–धीरे वह काम करना बन्द कर देगा, हम जीवित नहीं रह पायेगें। इसलिए सबसे पहली सामान्याकांक्षा 'आहार' है।
विद्यार्थी	–	अध्यापिका जी, दुसरी सामान्यकांक्षा कौन सी है ?
अध्यापिका जी	–	दुसरी जरूरी आवश्यकता है 'कपड़ा' – कौन बतायेगा हम कपड़ा क्यों पहनते हैं?
विद्यार्थी 1	–	अच्छे कपड़े पहनने से हम अच्छे दिखते है।
विद्यार्थी 2	–	ठण्ड में ज्यादा कपड़े पहनने से ठण्ड नहीं लगती।
विद्यार्थी 3	–	माताजी कहती है बारिश में बरसाती पहनों नहीं तो भीग जाओगे, शरीर गीला हो जायेगा तुमको सर्दी लग जायेगी।
विद्यार्थी 4	–	माताजी यह भी कहती है गर्मी में शरीर ढक कर जाओं नहीं तो लू लग लायेगी तुम बीमार पड़ जाओगें।

अध्यापिका जी	–	बहुत बढ़िया बेटाजी, आप लोगों को सब पता है। आपकी माताजी सही कहती है माताजी का आज्ञापालन करना तो शरीर स्वस्थ रहेगा।

अब तीसरी आवश्यकता है 'आवास' जिसमें हम अपने परिवार के साथ रहते हैं।

विद्यार्थी 1	–	अध्यापिका जी, उसे तो हम घर कहते है।
अध्यापिका जी	–	जी बेटाजी, उसे ही हम घर कहते हैं। कौन बतायेगा घर क्यों जरूरी है।
विद्यार्थी	–	घर नहीं होगा तो हम रहेगें कहाँ
विद्यार्थी 2	–	मेरी सभी वस्तुऐं भी घर में ही रहती है घर नहीं होगा तो मै अपनी जरूरी वस्तुऐं को कहाँ रखूँगा।
विद्यार्थी 3	–	अध्यापिका जी, मै अपने माताजी–पिताजी, दादाजी–दादीजी , और भाई–बहनों के साथ घर में रहता हूँ घर तो बहुत जरूरी है।
अध्यापिका जी	–	बेटाजी, आप सभी की बात सुनकर मैं बहुत खुश हूँ, आप सबने जो कहा बिल्कुल सही है। कुछ बातें मैं आप लोगों को समझाता हूँ। बेटाजी मकान में नीचे फर्श होता है जो हमें जमीन में रहने वाले कीड़े–मकोड़े, साँप–बिच्छू से बचाता है, चारों तरफ दीवाल होती है जितनी आवश्यकता है उतने खिड़की–दरवाजें होते है जिन्हें हम खोल–बन्द कर सकते हैं, ऊपर छत होती है इन सबसे हम तेज प्रकाश, तेज हवा, आँधी, तेज बारिश, तूफान से बचते है। पशु–पक्षी, जीव–जानवर से भी हमारी सुरक्षा होती है। इस प्रकार हमारी तीसरी सामान्याकांक्षा मकान है। जिसमें हम भी सुरक्षित रहते हैं और हमारी वस्तुऐं भी सुरक्षित रहती हैं।
विद्यार्थी	–	अध्यापिका जी, आज हमें बहुत सी नई बातें समझ में आई।'प्रणाम अध्यापिका जी' कल और समझेगें।
अध्यापिका जी	–	जरूर–जरूर, खुश रहो बेटाजी।

हमारी आवश्यकता

अध्यापिका जी – आप सब कैसे हो बेटाजी।

विद्यार्थी 1 – प्रणाम अध्यापिका जी। हम सब अच्छे है, अध्यापिका जी आप हमें जो समझाते है वह हम घर जाकर माताजी–पिताजी को बतलाते हैं।

विद्यार्थी 2 – पिताजी ने कहा अध्यापिका जी आपको जीवन का ज्ञान दे रहें हैं उन्हें नमन करना।

अध्यापिका जी – आपके माताजी–पिताजी आपको अच्छे संस्कार दे रहें हैं उसे ग्रहण करना हमेशा खुश रहोगे।

आज हम समझेगें महत्वकांक्षा क्या होती है।

सामान्याकांक्षा से हमारा शरीर स्वस्थ एवं सुरक्षित होता है। अब शरीर का उपयोग हम कहाँ कहाँ करते है। कौन बताऐगा।

विद्यार्थी 1 – मैं खेलता हूँ खुश होता हूँ।

विद्यार्थी 2 – मैं विद्यालय आता हूँ समझता हूँ, खुश होता हूँ

विद्यार्थी 3 – मैं माताजी की मदद करती हूँ माताजी भी खुश होती हैं।

विद्यार्थी 4 – मैं भी पिताजी का सहयोग करता हूँ।

विद्यार्थी 5 – हम सब काम शरीर से ही करते है।

अध्यापिका जी – बहुत अच्छा, आप सबने जो कहा सब एकदम सही है। खेलने से शरीर स्वस्थ होता है, विद्यालय में समझने का काम भी हम शरीर से ही करते है। माता–पिता श्रम पूर्वक स्वस्थ भी रहते है और सब काम भी हो जाता है बेटाजी। महत्वाकांक्षा हमारी वे आवश्यकताऐं है जो हमारे शरीर की गति को बढ़ा देती है, जिससे हमारे शरीर की उपयोगिता भी बढ़ जाती है। जैसे– आप सब विद्यालय आते हो कैसे आते हो बताओ ?

विद्यार्थी 1 – मैं साइकिल में आता हूँ।

विद्यार्थी 2 – मैं बस में आता हूँ।

विद्यार्थी 3 – मैं कार से आता हूँ।

अध्यापिका जी – मैं स्कूटर में आता हूँ। ये सभी साधन साइकिल, बस, कार, स्कूटर, रेलगाड़ी, हवाईजहाज जिससे हमारे शरीर की गति बढ़ जाती है और हम ज्यादा समय उपयोगी हो पाते है। इसे आने–जाने का साधन कहते है। इसे ही दूरगमन कहते है जिससे हम दूर–दूर तक जल्दी जा–आ सकते है।

विद्यार्थी 1 –	अध्यापिका जी, मैं समझ गया मैं विद्यालय बस में आता हूँ और कक्षा में अच्छे से समझ भी पाता हूँ
विद्यार्थी 2 –	हाँ, मैं भी समझ गया आप भी विद्यालय स्कूटर से आते है तो समय भी कम लगता है।
अध्यापिका जी –	बहुत अच्छा बेटाजी, आप लोग तो समझ गये दूसरी महत्वाकांक्षा है 'दूरश्रवण'
विद्यार्थी –	अध्यापिका जी, 'दूरश्रवण' क्या होता है ?
अध्यापिका जी –	जिस साधन से हम दूर–दूर की बातें सुन सकते है और दूर बैठे लोगों को अपनी बातें सुना भी सकते हैं बताओं तो क्या है वह साधन ?
विद्यार्थी 1 –	टेलीफोन मेरे घर में है।
विद्यार्थी 2 –	मेरे घर में भी है।
विद्यार्थी 3 –	जो हमारे मित्र संबंधी दूर रहते हैं उनसे हम फोन में बात करते हैं।
अध्यापिका जी –	एकदम सही बेटाजी, जो हमारे अपने दूर रहते हैं टेलीफोन से हम उनका हाल–चाल पूछतें है सब ठीक होने पर हम खुश होते है यदि कोइ बीमार है तो टेलीफोन से हमें तुरन्त पता चलता है हम जाकर उनकी सेवा कर पाते है कभी कभी टेलीफोन से ही औषधी बता देने है या जरूरत पढ़ने पर पूछ लेते है।
अध्यापिका जी –	कभी–कभी समझना और समझाना, सीखना और सीखाना ये भी हम टेलीफोन से करते हैं। लाउडस्पीकर और माईक ये भी दूरश्रवण के साधन है।
विद्यार्थी –	अध्यापिका जी, दूरश्रवण का मतलब अब समझ में आया।
अध्यापिका जी–	बहुत अच्छा। अब मैं आपकों बताता हूँ एक और साधन कें बारे में जिससे हम घर बैठे–बैठे दूर के लोगों को देख भी सकते हैं।
विद्यार्थी –	अध्यापिका जी ये मै बताऊँगा टी.वी
अध्यापिका जी –	बिल्कुल सही बेटाजी, इसे कहते है टेलीविजन ये दूरदर्शन का साधन है जिससे हम दूर–दूर के दृश्यों को देख सकते है। टी.वी, विडियो, कैमरा, कम्प्यूटर ये सभी दूरदर्शन के साधन है। इन साधनों से हम घर बैठे–बैठे समुद्र, जंगल, पहाड़ जानवर पूरी धरती की सुन्दरता को देख सकते है

आज हमने जाना दूरगमन, दूरश्रवण और दूरदर्शन के बारे में अगली कक्षा में आप इन सबका उपयोग, सदुपयोग करना भी जानोगें।